बिना कुंआ का गांव अछूत

आज से लगभग 125 वर्ष पहले महिषी गांव में फूदन चौधरी का जन्म हुआ था। फूदन चौधरी प्रतिष्ठित विद्वान पंडित थे। पढ़ाई समाप्त करने के बाद शाहपुर स्टेट में मैनेजर के रूप में कार्य करते थे। शाहपुर से ही उनका कार्यक्रम गंगा स्नान करने का बना। उनको स्टेट के मालिक ने स्वर्ण से भरा बक्सा दिया, जो बक्सा वे ढ़ेंगा गांव के मिश्रा परिवार में रखने के लिए दिए।

उनके साथ आठ आदमी कहाड़ के साथ था। रास्ते में उन्होंने कहाड़ के भीतर से पूछा अभी हमलोग कहां आए है तो कहाड़ लाने (ढ़ोने वाले) से कहा कि अभी हमलोग एकाढ़ आए है। इस गावं में कुंआ है तो बगल के आदमी ने जबाब मिला नहीं है।

इसपर फूदन बाबा ने कहा तेजी से आगे बढ़िये आगे जहां कुंआ मिलेगा वहां कहाड़ को रखना है मैं वही पर पेशाब करूंगा। इन सारी बातों की जानकारी बगल में खड़ा एकाढ़ के ही यशोधर राय तथा हरेकृष्ण राय से कहाड़ बाहक को मिला और कहाड़ बाहक ने स्व0 फूदन चौधरी को दिया।

इस बात की चोट यशोधर राय एवं हरेकृष्ण राय को बहुत बुरा लगाा। उन्होंने मन में सोच लिया कि हमें इनके यहाँ सम्बंध करना है तथा एक कुंआ का निर्माण गांव में करना है। वे कुंआ का निर्माण अपने दरवाजा के बगल में किये।

फूदन बाबा का लड़का नरेन्द्र चौधरी जो मधेपूरा में पढ़ते थे पढ़ने लिखने में तेज थे वे कुंवारा थे। ने महिषी के रामाकांत झा जिसका फूदन बाबा चौधरी के परिवार से अच्छा रिस्ता था के साथ पहले यशोधर राय से सम्पर्क स्थापित किया। तथा उनको अपनी बेटी के साथ नरेन्द्र चौधरी के शादी सम्बंधी प्रस्ताव दिया। रामाकांत झा नरेन्द्र चौधरी को बचपन में पढ़ाते–लिखाते थे। उन्होंने यशोधर राय से कहा कि मैं प्रयास करूंगा कि आपके लड़की की शादी नरेन्द्र से हो।

उस समय मधेपूरा में कोर्ट था। महिषी के हरि झा मधेपुरा मामला, सुलझाने के लिए मधेपुरा गए हुए थे। नरेन्द्र चौधरी मधेपुरा में ही पढ़ते थे। हरि झा ने नरेन्द्र

चौधरी से कहा कि आपकी शादी एकाढ़ होने वाली है। इधर रामाकांत झा मछली, दही, भाड़ में मछली देने हेतु मछली के लिए गोड़होघार गए। वहां बंगाली मछली मारता था। रामाककांत झा सबसे अच्छी मछली बंगाली से लिया बंगाली ने उस मछली के बदले दूसरा मछली लेने के लिए कहा लेकिन रामाकांत झा नहीं लिये– इसके चलते बंगाली और श्री झा में अनवन हो गई। बंगाली को श्री झा ने बुरी तरह पीटा। बंगाली ने केश मधेपूरा कोर्ट में दर्ज कर दिया। कोर्ट ने रामाकांत झा को 2000 रू0 जुर्माना कर दिया। उन्होंने कोर्ट का आदर करते हुए जुर्माना जमा किया।

मधेपुरा में रामाकांत बाबू की भेंट नरेन्द्र चौधरी से हुई। उन्होंने उनके शादी के बारे में उनसे कहा कि तुम्हारी शादी एकाढ़ में करने का हमने निश्चय किया है। परसो तुम गांव आना मैं बनगांव सभा गाछी में रहुंगा साथ में एकाढ़ के लड़की पात्र यशोधर राय भी वहां रहेंगे।

ऐसा ही हुआ निर्धारित तिथि को महिषी से तिरपीत चौधरी एवं रामाकांत का बनगांव सभागाछी गए और एकाढ़ से यशोधर राय तथा सतरवार के रधुनाथ झा गए। सभा गाछी में 1000 रू0 में दहेज तय हुआ नरेन्द्र चौधरी भी पहुंच गए थे। वर ने सब को प्रणाम किया। बनगांव में ही दही, चूड़ा, चीनी एवं पेड़ा का भोजन करवाया गया। विवाह की तिथि तय की गई।

निर्धारित तिथि को शादी हुई। यशोधर ने फूदन चौधरी को कुंआ खुदवाने का कारण, तथा रास्ता में कहाड़ को इस गांव में कुआ नहीं रहने के कारण पेशाब नहीं करने की बात बताई। कुंआ शुरू से ही मिथिला मैथिल के संस्कृत का प्रतीक है। कुंआ की महत्ता पहले से ही रहा है।